अमृत प्रार्थना
भगवान से (अज्ञान से ज्ञान की ओर)

हे प्रभु! हे अंतर्यामी! हे जगत्पते! हे सामर्थशाली!
मुझे अज्ञान से ज्ञान की ओर ले चलें। अज्ञानियों से ज्ञानियों के बीच में ,संतों के बीच में ,भक्तों के बीच में ले चलें। इस अज्ञानता से मुझे संतुष्टि नहीं। इस अज्ञानमय जीवन से मुझे संतुष्टि नहीं । ना जाने कितने जन्मों से इस अज्ञान में भटक रहा हूँ। तथा आप मुझे ज्ञान की ओर ले चलें। अज्ञानियों के बीच में रहते हुए अनंत जन्म बीत गए। मुझे ज्ञानियों के बीच में ले चलें। अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलें। यह संसार अंधकारमय है,अज्ञान अंधकारमय है। ज्ञान के प्रकाश की ओर ले चलें। भक्ति के, वैराग्य के प्रकाश की ओर ले चलें। असत्य से सत्य की ओर ले चलें। असत्य वादियों से सत्य वादियों की ओर ले चलें। सारा जीवन झूठ बोलते हुए,
झूठों के बीच में,असत्य वादियों के बीच में रहते हुए बीता है। अतः अब हमें सबसे की ओर ले चलें। सत्य वादियों की ओर ले चलें। मृत्यु से अमरत्व की ओर ले चलें। चौरासी लाख योनियों में जन्म लिया और उसके बाद मृत्यु को प्राप्त हुए ।अब मुझे उस देश में ले चलें, जहाँ पर सभी अमर हो जाते हैं।भगवान को प्राप्त करके, भगवान के लिए जीवन जीकर, सब अमर हो जाते हैं ।
जहां पर किसी की मृत्यु नहीं होती। अर्थात अपने को उस अमरत्व को प्राप्त कर लेते हैं। मुझे भी मृत्यु से, मृत्यु भाव से,जन्म भाव से मुक्त करें, तथा अमृता की ओर ले चलें।
आत्मा अजर अमर है ।

ॐ शांति ! शांति ! शांति!